International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 204-207
www.educationjournal.info
Received: 01-03-2023
Accepted: 06-04-2023

गोपाल कृष्ण भारद्वाज
के.एस. साकेत (पी.जी.) कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
गोपाल कृष्ण भारद्वाज
के.एस. साकेत (पी.जी.) कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

अन्तर्मुखी व वाह्यमुखी शिक्षकों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

गोपाल कृष्ण भारद्वाज

सारांश
शिक्षक का शिक्षण प्रभावशाली होना इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षक के व्यवहार की प्रकृति कैसी है। शिक्षक आने वाले समाज का दर्पण होता है। अर्थात् प्रस्तुत शोध पत्र में अन्तर्मुखी शिक्षकों के शिक्षण के लगभग सभी आयाम औसत या उससे अच्छे स्तर के हैं लेकिन अन्तर्मुखी शिक्षकों का शिक्षण हेतु पूर्ण योजना एवं तैयारी तथा विषय वस्तु का ज्ञान का पक्ष अधिक सशक्त है। वहीं दूसरी ओर बाहयमुखी शिक्षकों के शिक्षण के सभी आयाम लगभग औसत या उससे उच्च स्तर के हैं बहिर्मुखी शिक्षकों का कक्षागत प्रबन्धन शिक्षक के गुण अर्न्तवेयक्तिक सम्बंध का पक्ष अधिक सशक्त है किंतु वाह्यमुखी शिक्षकों का शिक्षण हेतु पूर्ण योजना एवं तैयारी तथा विषय वस्तु का ज्ञान का पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर है।

कूट शब्दः शिक्षण, अन्तर्मुखी शिक्षकों, बाहयमुखी शिक्षको, अर्न्तवेयक्तिक सम्बंध

प्रस्तावना
शिक्षक का शिक्षण की भूमिका व ज्ञान तथा व्यवहार सम्पूर्ण समाज को बदल सकता है अर्थात् यह भी कहा जा सकता है कि शिक्षक समाज को शिक्षण के द्वारा समाज को जागरुक करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षक के अर्न्तमुखी व वाह्यर्मुखी व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया है तथा अन्तर्मुखी व वाह्यमुखी शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयोमों का अध्ययन करना प्रमुख उद्देश्य है। मध्यमानों से ज्ञात होता है कि अर्न्तमुखी शिक्षकों का शिक्षण बहिर्मुखी शिक्षकों की अपेक्षा कम प्रभावशाली होता है। मानक विचलन के द्वारा स्पष्ट होता है कि वहिर्मुखी शिक्षकों का समूह अन्तर्मुखी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण प्रभावशीलता की दृष्टि से अधिक विषभोगी है।

अध्ययन क्षेत्र के उद्देश्य
1. अन्तर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
2. बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।
3. अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

विधित पत्र
प्रस्तुत शोध प्रपत्र मानव विचलन विधि प्राथमिक व द्वितीय आकड़ों पर आधारित। अन्तर्मुखी बहिर्मुखी 80 शिक्षक शिक्षकाओं के व्यक्तित्वनुसार विवरणों को आधार बनाया गया। इसमें 'मापर ब्रिक्स' ''व्यक्तित्व प्रोफाइल का प्रयोग किया गया।
वर्तमान समय में शिक्षा के युग में शिक्षण का विशेष स्थान है। इसलिए शोधार्थी ने शिक्षकों के अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन उनके व्यक्तित्वनुसार उनकी तालिका निम्नवत है।

तालिका 1: विभिन्न संकायों के शिक्षक शिक्षिकाओं का व्यक्तित्वानुसार विवरण

व्यक्तित्व / संकाय	शिक्षक (40) अर्न्त. अभय. बर्हि			शिक्षकायें (40) अर्न्त. अभय. बर्हि			कुल शिक्षक शिक्षिकायें (80) शिक्षक शिक्षिका योग		
बी.एड.	4	2	2	2	2	8	8	12	20
बी.एस.सी	2	2	4	1	0	1	8	2	10
बी.सी.ए.	4	3	7	2	2	2	14	6	20
बी.ई.काम.	1	1	1	2	2	3	3	7	10
बी.बी.ए	2	2	3	3	4	6	7	13	20
कुल	13	10	17	10	10	20	40	40	80

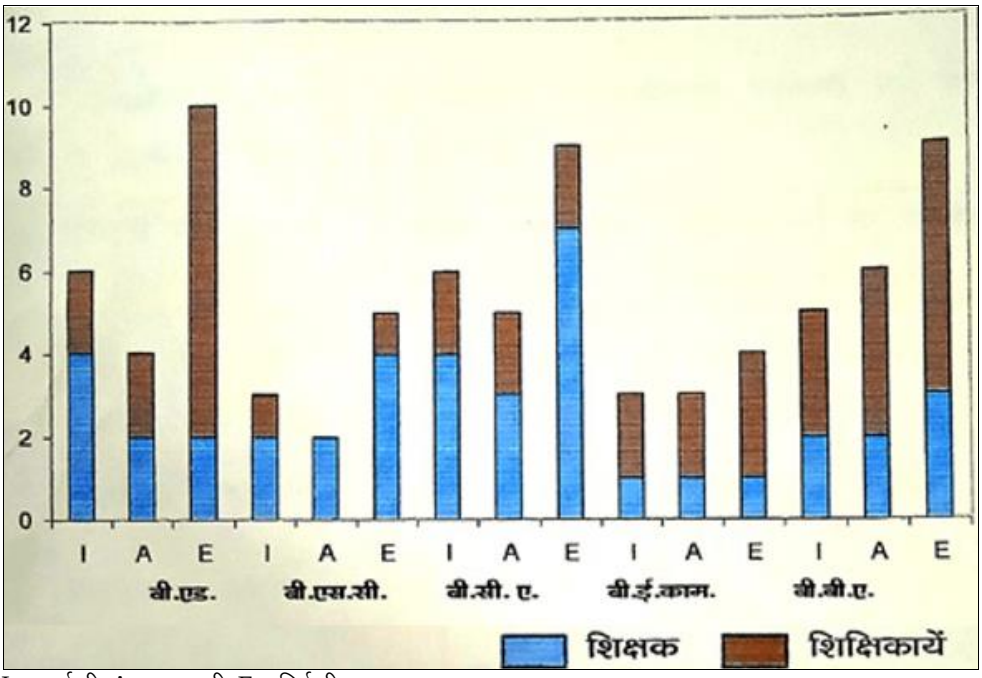

I अन्तर्मुखी A उभयमुखी E बहिर्मुखी

तालिका–1 से स्पष्ट है कि कुल 80 शिक्षक शिक्षिकाओं के न्यादर्श में से 20 शिक्षक शिक्षिकायें (10–10) उभयमुखी है। किन्तु अन्तर्मुखी शिक्षकों की संख्या (13), अन्तर्मुखी शिक्षिकाओं की संख्या (10) से अधिक है । इसी प्रकार बहिर्मुखी शिक्षिकाओं की संख्या (20) बहिर्मुखी शिक्षकों की संख्या (17) से अधिक है अर्थात् शिक्षिकायें अधिक बहिर्मुखी व शिक्षक अधिक अन्तर्मुखी हैं अपेक्षाकृत शिक्षिकाओं के।

इसी प्रकार तालिका 1 से स्पष्ट है कि कुल शिक्षक–शिक्षिकाओं का 25 प्रतिशत भाग उभयमुखी है जो कि शिक्षक शिक्षिकाओं में समान है।

अन्तर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययनः

तलिका 2: अन्तर्मुखी शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण पर प्राप्त अंकों के माध्य व मानक विचलन का विवरण।

क्र. सं.	शिक्षक के आयाम	संख्या (N)	मध्यमान (M)	अधिकतम प्राप्तांक	मा. विचलन (S. D)
1.	शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी	23	82	110	4.87
2.	कक्षागत प्रबन्ध	23	71.5	140	7.08
3.	विषयवस्तु का ज्ञान	23	55	70	6.2
4.	शिक्षण के गुण	23	94	170	8.9
5.	अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध	23	59	110	4.6

तालिका 2 से स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी शिक्षकों के शिक्षण के लगभग सभी आयाम औसत या उससे उच्च स्तर के हैं। लेकिन तालिका 2 से यह भी स्पष्ट है कि अन्तर्मुखी शिक्षकों का "शिक्षण हेतु पूर्व योजन एवं तैयारी" तथा "विषय वस्तु का ज्ञान" का पक्ष अधिक सशक्त है। किन्तु "कक्षागत प्रबन्ध", "शिक्षक के गुण" तथा अन्तवैयक्तित सम्बन्ध" का पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर है और लगभग सामान्य स्तर का है। इसका कारण शायद अन्तर्मुखी शिक्षकों का संकोची तथा लज्जाशील होना है। इसी कारण वे अपनी योग्यतानुसार विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। साथ ही कक्षा को नियन्त्रित व्यवस्थित करने में उन्हें कठिनाई होती है, तथा विद्यार्थियों के साथ भी वे सीमित सम्बन्ध ही बना पाते हैं।

जहाँ तक विचलनशीलता का प्रश्न है। ''कक्षागत प्रबन्ध'' तथा "शिक्षक के गुण" आयाम में विचलन प्राप्त हुआ। इसका कारण अधिक तथा कम अनुभव वाले शिक्षकों का न्यादर्श में होना हो सकता है। अन्य तीन आयामों में विचलन सामान्य प्राप्त हुआ ।

बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

तालिका 3: बहिर्मुखी शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण पर प्राप्त अंकों के मध्यमान व मानक विचलन का विवरण

क्र. सं.	शिक्षण के आयाम	संख्या (N)	मध्यमान (M)	अधिकतम प्राप्तांक	मा. विचलन (S. D)
1.	शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी	37	69	110	8.92
2.	कक्षागत प्रबन्ध	37	97	140	4.58
3.	विषयवस्तु का ज्ञान	37	46	70	6.8
4.	शिक्षण के गुण	37	130	170	10.3
5.	अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध	37	82	110	7.3

तालिका 3 से स्पष्ट है कि बहिर्मुखी शिक्षकों के शिक्षण के सभी आयाम लगभग औसत या उससे उच्च स्तर के हैं । किन्तु तालिका 3 से स्पष्ट है कि बहिर्मुखी शिक्षकों का "कक्षागत प्रबन्ध", "शिक्षक के गुण" तथा " अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध" का पक्ष अधिक सशक्त है। किन्तु "शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी" तथा "विषयवस्तु का ज्ञान" का पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर है। इसका कारण शायद बहिर्मुखी शिक्षकों का अधिक वाक्पटू होना अपने आपको तथा अपने ज्ञान को अधिक निपुणता तथा प्रभावशाली ढंग से व्यक्त कर पाना है। साथ ही बहिर्मुखी शिक्षकों के शीघ्र मित्र बनाने, जल्दी ही विद्यार्थियों से घुल मिल जाने के कारण यह पक्ष सर्वाधिक सशक्त है।

मानव विचलन से पता चलता है कि केवल "कक्षागत प्रबन्धष के पक्ष को छोड़कर शिक्षण के अन्य सभी पक्षों में अधिक विचलन दिखाई देता है। जिससे स्पष्ट है कि बहिर्मुखी शिक्षकों का समूह शिक्षण प्रभावशीलता तथा उसके विभिन्न आयामों की दृष्टि से विषमांगी है। "शिक्षण प्रभावशीलता" में पाया जाने वाला यह विचलन बहिर्मुखी व्यक्तित्व में पाये जाने वाले विभिन्न गुणों जैसे वाक्पटुता, शीघ्र ही मित्र बनना व बनाना, प्रभावशाली आत्म अभिव्यक्ति, अन्य व्यक्तियों पर नियन्त्रण आदि के विभिन्न मात्रा में पाये जाने के कारण पाया जाता है।

अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 4 से अन्तर्मुखी व बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों के मध्यमान तथा मानक विचलन तथा 1 मानों के अध्ययन से कुछ तथ्य सामने आये जो अग्रलिखित हैं–

अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर पाया गया है। मान (35.32) 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः परिकल्पना कि अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। 0.01 स्तर पर अस्वीकार कर दी जाती है ।

मध्यमानों से ज्ञात होता है कि अन्तर्मुखी शिक्षकों का शिक्षण बहिर्मुखी शिक्षकों की अपेक्षा कम प्रभावशाली है। मानक विचलन कसे स्पष्ट होता है कि बहिर्मुखी शिक्षकों का समूह अन्तर्मुखी शिक्षकों की तुलना में शिक्षण प्रभावशीलता की दृष्टि से अधिक विषमांगी है।

तालिका 4: अर्न्तमुखी तथा बर्हिमुखी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान तथा विचलन तथा ज का मान

क्र. सं.	शिक्षण के आयाम	अन्तर्मुखी शिक्षक			बहिर्मुखी शिक्षक			मान t	P
		संख्या (N)	मध्यमान (M)	मा. विचलन (S. D)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मा. विचलन (S. D)		
1.	शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी	23	82.00	4.87	37	69.00	8.92	7.28	<-01
2.	कक्षागत प्रबन्ध	23	71.50	7.08	37	97.00	4.52	9.35	<-01
3.	विषयवस्तु का ज्ञान	23	55.00	6.2	37	46.00	6.8	5.26	<-01
4.	शिक्षण के गुण	23	94.00	8.90	37	130.00	10.3	14.33	<-01
5.	अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध	23	59.00	4.60	37	82.00	7.3	14.97	<-01
6.	कुल शिक्षण प्रभावशीलता	23	361.50	5.40	37	424.00	8.3	35.32	<-01

अन्तर्मुखी शिक्षक संकोची शर्मीले स्वभाव के होने के कारण अधिक प्रभावी शिक्षण नहीं कर पाते जबकि बहिर्मुखी शिक्षक योग्यता में उनके समान होने के बाद भी अपनी वाक्पटुता, दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता के कारण अपेक्षाकृत प्रभावी शिक्षण कार्य करते हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों में भी भित्र–भित्र अन्तर्मुखी तथा बहिर्मुखी शिक्षकों की दृष्टि से 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

"शिक्षणपूर्व तैयारी" तथा "विषयवस्तु का ज्ञानष आयामों की दृष्टि से अन्तर्मुखी शिक्षक बहिर्मुखी शिक्षकों की तुलना में अधिक प्रभावी हैं किन्तु "शिक्षण प्रभावशीलता" की दृष्टि से बहिर्मुखी शिक्षकों की अपेक्षा कम प्रभावी है। इसका कारण शायद यह है कि वे अपने ज्ञान को प्रभावी ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते हैं। साथ ही वे अपनी तैयारी को भी पूर्णतः क्रियान्वित नहीं कर पाते हैं ।

शिक्षण के अन्य पक्षों जैसे "कक्षागत प्रबन्ध'', तथा "अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध" की दृष्टि से बहिर्मुखी शिक्षक अन्तर्मुखी शिक्षकों की तुलना में अधिक प्रभावशाली है।

तालिका 4 से हम यह कह सकते हैं कि बहिर्मुखी शिक्षक विषय वस्तु के ज्ञान" तथा "शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी'' की दृष्टि से कमजोर होने के बाद भी प्रभावशाली शिक्षण में सफल हैं। इसका कारण शायद यह है कि वे अपने लोकप्रिय व्यक्तित्व, मिलनसार स्वभाव, वाक्पटुता होने के कारण प्रभावी शिक्षण में सफल होते हैं।

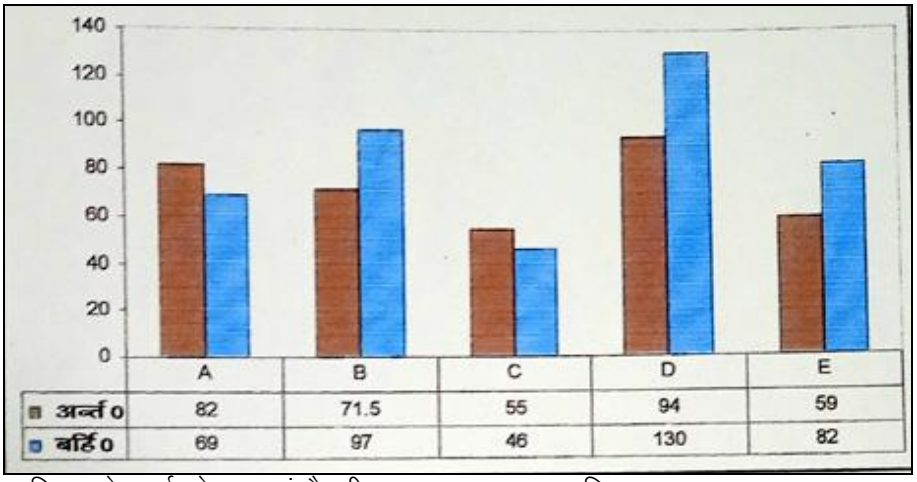

A शिक्षण हेतु पूर्व योजना एवं तैयारी B कक्षागत प्रबन्ध C विषयवस्तु का ज्ञान
D शिक्षक के गुण E अतवैयक्तिक सम्बन्ध

तलिका 5: शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के व्यक्तित्व परीक्षण पर प्राप्तांकों के मध्यमान तथा मानक विचलन का वितरण

लिंग	संख्या	व्यक्तित्व परीक्षण पर प्राप्तांक		t मान	P
	(N)	मध्यमान (M)	मा. विचलन (S.D.)		
शिक्षक	40	5	8.93	4.91	<.01
शिक्षिका	40	14	7.38		

निष्कर्ष:

शोधार्थी ने अध्ययन क्षेत्र अन्तर्मुखी व वाह्यमुर्खी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया जो समाप शिक्षक शिक्षण के लिए योजनावद्ध शिक्षण के लिए इनके शिक्षण विधि में सुधार की और आवश्यकता है। यह शोध अर्न्तमुखी व वाह्यमुर्खी शिक्षकों व शिक्षिकाओं के शिक्षण व विभिन्न क्षेत्रों परिवर्तनशील भौतिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में ओर भी उपयोगी सिद्ध होगा तथा अर्न्तमुखी व वाह्यर्मुखी शिक्षकों और शिक्षिकाओं को तथा खासतोर पर अर्न्तमुखी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को अपने आप में और शिक्षण में सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. डव एनी ''अन्तर्मुखी बहिर्मुखी व्यक्तियों तथा उनके स्थानिक बौद्धिक कारणों के सम्बन्धों का अध्ययन'' डिजरटेशन एवस्ट्रैक्ट इन्टरनेशनल, वाल्यूम–54 नं. 5।
2. गैरेट हैनरी ई. 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी'' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली 1956।
3. गुप्ता रामबाबू– ''शिक्षा मनोविज्ञान'' न्यू पब्लिशिंग हाउस चौक, कानपुर।
4. गुप्ता एस.पी., अलका– ''उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
5. गिलफर्ड, जे.पी. ''फण्डामेण्टल स्टेटिक्स इन साइकोलोजी एण्ड एजूकेशन'' एन.सी.ग्रा. हिल बुक कम्पनी, न्यायार्क–1956।
6. गुडवार, स्केट्स– ''मैथड्स ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'' न्यूयार्क एटलेस, सेन्चुरी क्राइट्स इडम, 1954।
7. आइसेन्क, हेन्स – ''डाइमेन्शन ऑफ पर्सनेलिटी'' लन्दन रूटलेज एण्ड केगन पाल लि. 1955।
8. जोल टोलीवर – ''अफ्रीका अमेरिका के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों की प्रभावशीलता का प्रत्यक्षीकरण एवं उसका शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध'' डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट इन्टरनेशनल, जनवरी 1996, वॉल्यूम–56, नं. 7, पृष्ठ 2447ए ।
9. क्लिन पी. एण्ड गेल ए. – ''मनोविज्ञान की परीक्षा में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तियों की निष्पत्ति के विषय में अध्ययन'' दी ब्रिटिश जनरल ऑफ एजूकेशन साइक्लोजी, फरवरी (1971) वॉल्यूम 41, पृष्ठ 90।
10. मंगल, एस. ए. (1993)– ''एडवांस एजूकेशन साइक्लोजी'' प्रिन्टिश हॉल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, न्यू देहली।
11. कुरूक्षेत्र पत्रिका, दिसम्बर 2020